तूफानी संगीत

वसंत के एक दिन मेरी चाची को तहखाने में एक पुरानी क्लैरिनेट मिल गई. उन्होंने उसे साफ किया. उसकी मुँह-नाल को घुमाया. सूराख़ों पर उँगलियाँ रखीं, एक गहरी साँस ली और क्लैरिनेट बजाने लगीं.

“ओ मधुर संगीत!” वह चिल्लाईं. “यह मेरे लिए है!”

अधिकतर समय हॉल में बनी अलमारी के अंदर ही वह अभ्यास करती थीं ताकि सीमौर् चाचा परेशान न हों.

लेकिन एक दिन मारग्रेट चाची को अहसास हुआ कि अलमारी के अंदर वह संगीत न सीख सकती थीं. “सीमौर्,” वह बोली, “क्योंकि संगीत शिक्षा का खर्च हम नहीं उठा सकते, मैं जीवन की ध्वनियों का अध्ययन करूँगी.”

मारग्रेट चाची मुझे और अपनी क्लौरिनेट को लेकर जानवरों के अस्पताल आईं जहाँ वह कभी काम करती थीं. उन्होंने कुत्ते और बिल्लियों के बोलने और गुर्राने की आवाज़ें सुनीं. “रआआफफ,” उनकी पुरानी क्लौरिनेट से आवाज़ आई.

दो चितकबरे कुत्ते उनके साथ गाने लगे.

“हे भगवान! यह तो धमाकेदार है!” मारग्रेट चाची ने कहा.
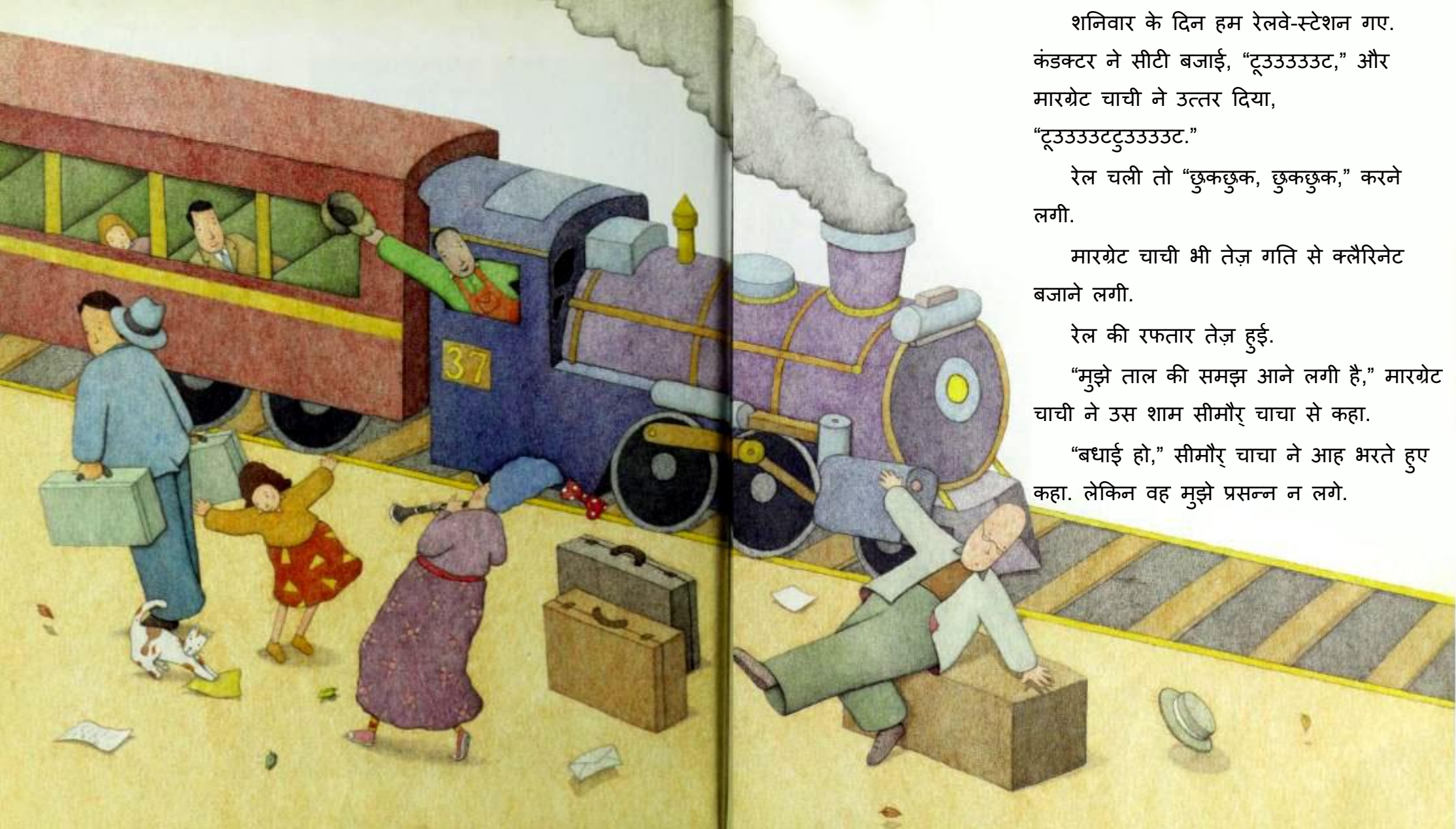
शनिवार के दिन हम रेलवे-स्टेशन गए. कंडक्टर ने सीटी बजाई, “टूउउउउउट,” और मारग्रेट चाची ने उत्तर दिया, “टूउउउउटटुउउउउट.”

रेल चली तो “छुकछुक, छुकछुक,” करने लगी.

मारग्रेट चाची भी तेज़ गति से क्लैरिनेट बजाने लगी.

रेल की रफतार तेज़ हुई.

“मुझे ताल की समझ आने लगी है,” मारग्रेट चाची ने उस शाम सीमौर् चाचा से कहा.

“बधाई हो,” सीमौर् चाचा ने आह भरते हुए कहा. लेकिन वह मुझे प्रसन्न न लगे.

रविवार के दिन हम खाने का सामान लेकर पिकनिक करने चले. हम एक पुरानी पहाड़ी पगडंडी के रास्ते से गए. लेकिन जैसे ही सीमौर् चाचा ने चटाई बिछाई और किशमिश और मुर्गी का सलाद खाने के लिए सजाया, मारग्रेट चाची नदी की ओर चली गईं.

पहले उन्होंने ध्यान से सुना, फिर संगीत बजाया.

ऐसा लगा कि उनका संगीत सुन कर चमकते पानी की फुहारें चट्टानों पर उछलने लगी थीं.

“मैं नाचूंगी, मैं गाऊँगी, मैं संगीत बजाऊँगी,” मारग्रेट चाची गाने लगीं.

सीमौर् चाचा ने अपना सिर हिलाया.
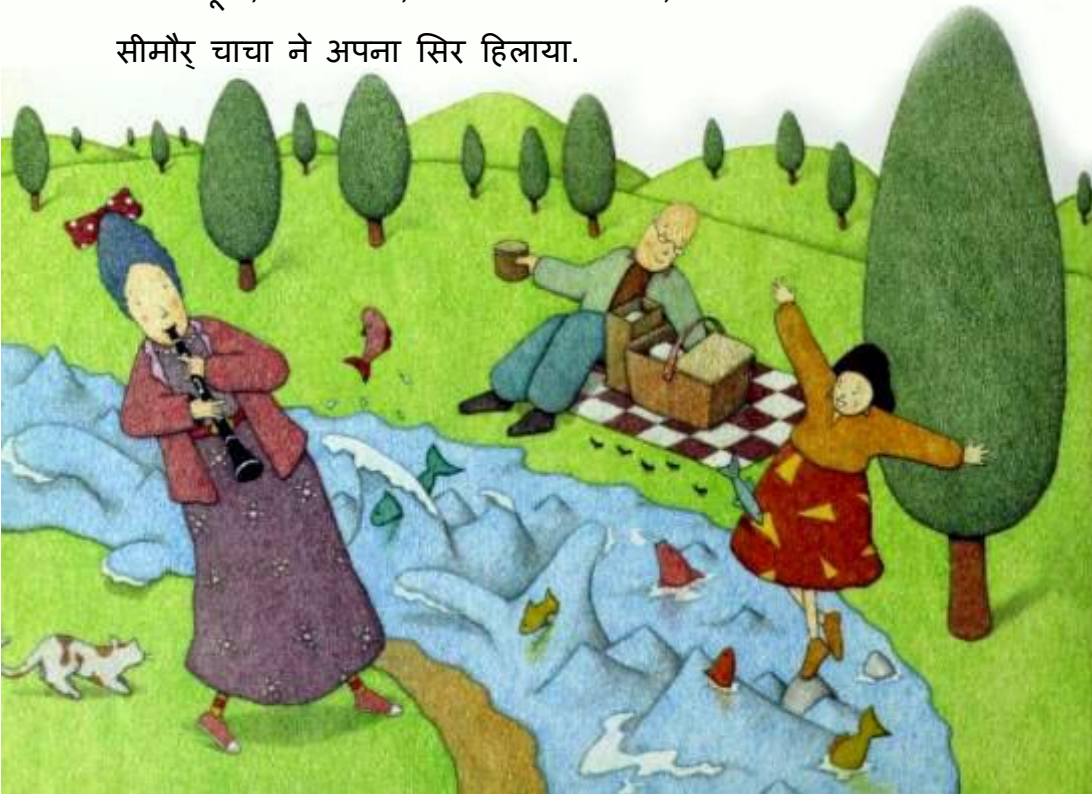
सोमवार को अवकाश था. सीमौर् चाचा ने मारग्रेट चाची को काम से छुट्टी करने को कहा. हम सब ने अपनी-अपनी पनामा टोपी पहनी और नगर की ओर चल पड़े.

सुबह का समय था और रास्तों पर शांति थी.

लेकिन दुपहर में चर्च की घंटियाँ बजने लगीं.

हँसते-खिलखिलाते बच्चे परेड देखने के लिए दौड़े आए. लाल बत्ती पर रुका ट्रक ज़ोर-ज़ोर से हॉर्न बजा रहा था. हॉट डॉग बेचने वाला एक आदमी चिल्लाया, “उन्हें सीधा यहाँ ले आओ.....”

इसके पहले कि सीमौर् चाचा और मैं मारग्रेट चाची को रोक पाते, उन्होंने अपनी क्लैरिनेट उठा ली और अपनी तान से हमें चकित कर दिया.

“सब नाचो, गाओ,” वह चिल्लाईं. आने-जाने वाले लोग रुक कर उछलने और नाचने लगे. मारग्रेट चाची की तान ऊँची और ऊँची होती गई. एक पुलिसवाले ने अपनी सीटी बजाई. सारी ध्वनियों को जोड़ कर मारग्रेट चाची ने एक अटपटा शहरी गीत बनाया. पेड़ झूमने लगे, डालों पर लगे पत्ते फड़फड़ाने लगे.

“कोई तो अनहोनी होगी,” सीमौर् चाचा ने निराशा से कहा,

अनहोनी मौसम के साथ हुई.
उस रात ग्लैडीज़ तूफान तट से आ टकराया.
सबने घरों की खिड़कियाँ बंद कर लीं, रोंयेदार चप्पलें पहन लीं
और गर्म चाय पीने लगे. सिर्फ मेरी चाची को छोड़ कर. “इस तूफान
के साथ मिलकर संगीत बनाने से मुझे कोई नहीं रोक सकता!”
मूसलाधार बारिश में वह घर से बाहर आ गईं.
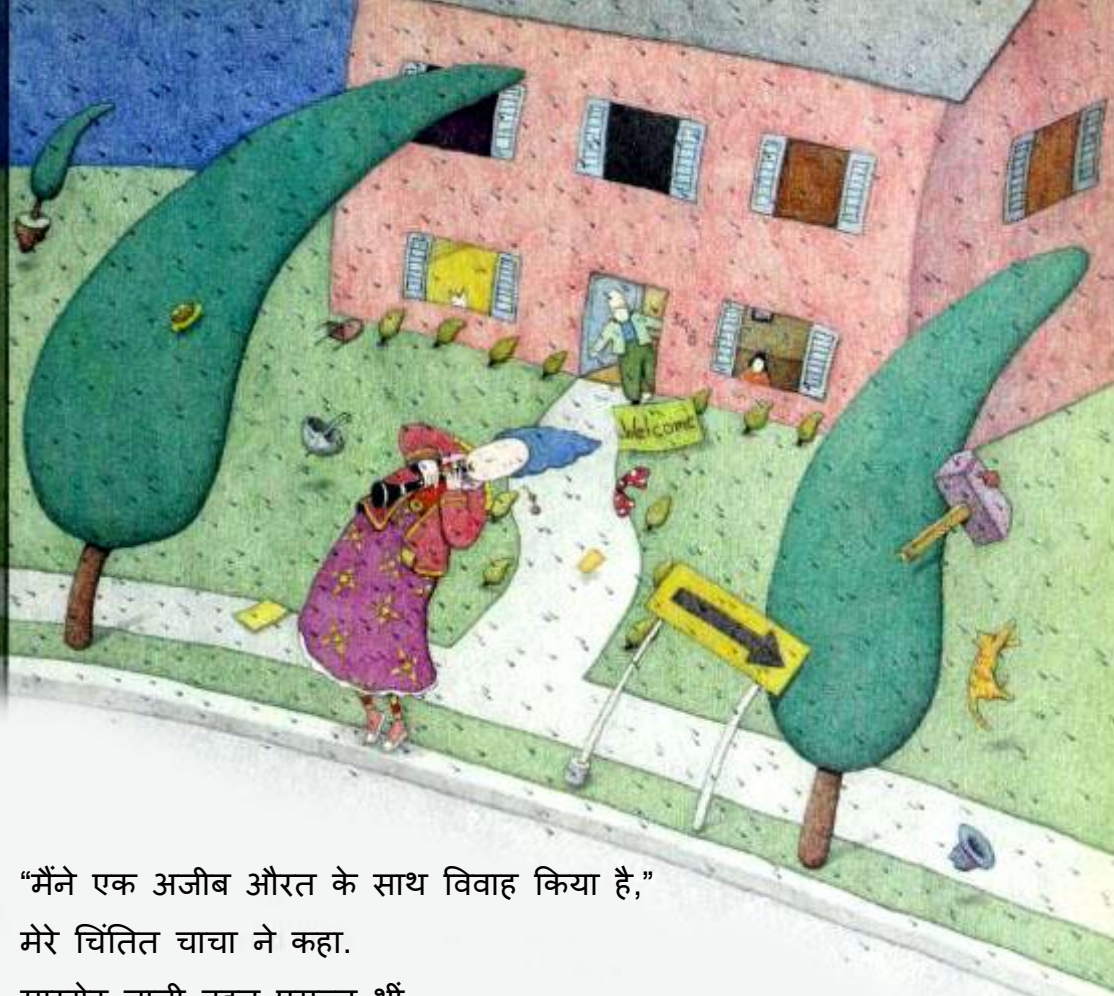
“मैंने एक अजीब औरत के साथ विवाह किया है,”
मेरे चिंतित चाचा ने कहा.
मारग्रेट चाची बहुत प्रसन्न थीं.
जितना वह संगीत बजातीं, उतनी ही तेज़ी से किवाड़ों को खड़खड़ाता हुआ,
गलियों के नामपट्टों को खनखनाता हुआ, तूफान गाँव के बीच से चलने लगा.
बिजली कड़की. भयंकर बारिश शुरु हो गई.
“काश वह अंदर आ जाती,” सीमौर् चाचा ने कहा.
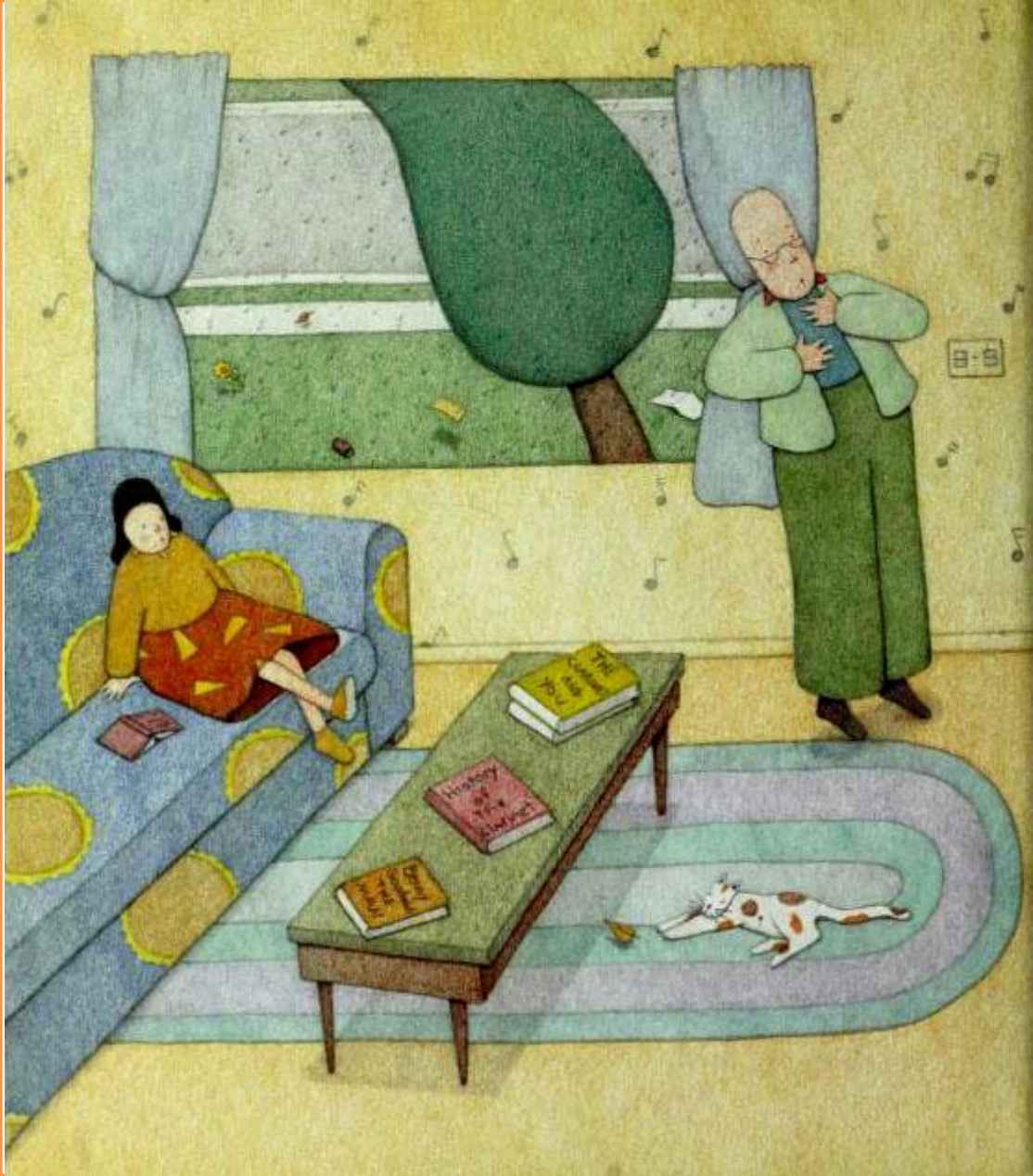
तभी पूरी तरह भीगी हुई मारग्रेट चाची लड़खड़ाती हुई घर के अंदर आईं.

“क्या आप ठीक हैं?” हमने पूछा.

“प्रिय सीमौर्, सब नष्ट हो गया! मेरी क्लैरिनेट उड़ गई!” और मारग्रेट चाची रोने लगी.

शुक्रवार आते-आते सीमौर् चाचा भी रो रहे थे.

“संगीतकारों को संगीत का हमेशा सृजन करना चाहिए,” उन्होंने मुझे समझाया. “अब हमारे घर में कुछ अधिक ही शांति हो गई है.”

सबको उत्साहित करने के लिए मैंने सीमौर् चाचा और मारग्रेट चाची को अपने मनपसंद आइस-क्रीम पार्लर में आमंत्रित किया. लेकिन बाहर सड़क पर हमें फायर-ट्रक के सायरन की दर्दनाक चीख और रस्सी पर लयबद्ध ढंग से कूदने की आवाज़ सुनाई दे रही थी. इस बार मारग्रेट चाची ने ऐसा नहीं कहा, “असंभव है, पैट!” उन्होंने अपनी आइस-क्रीम को छुआ तक नहीं.

उस शाम सीमौर् चाचा और मैंने कई साइन-बोर्ड बनाए.

रात के खाने के समय तक नगर के लोग बिल्लियों के गले के दो पुराने पट्टे, किटकिटाते नकली दाँतों के तीन जोड़े, टिकटिक करती एक बड़ी घड़ी, कई टूटे हुए रिकार्ड, चाभी वाली एक गुड़िया जो ‘माँ, माँ’ चिल्लाती रहती थी और एक संगीत-पेटी ढूँढ़ कर लाए. हर कोई कुछ न कुछ खोज कर लाया था, लेकिन कोई भी चाची की क्लैरिनेट न ढूँढ़ पाया था.
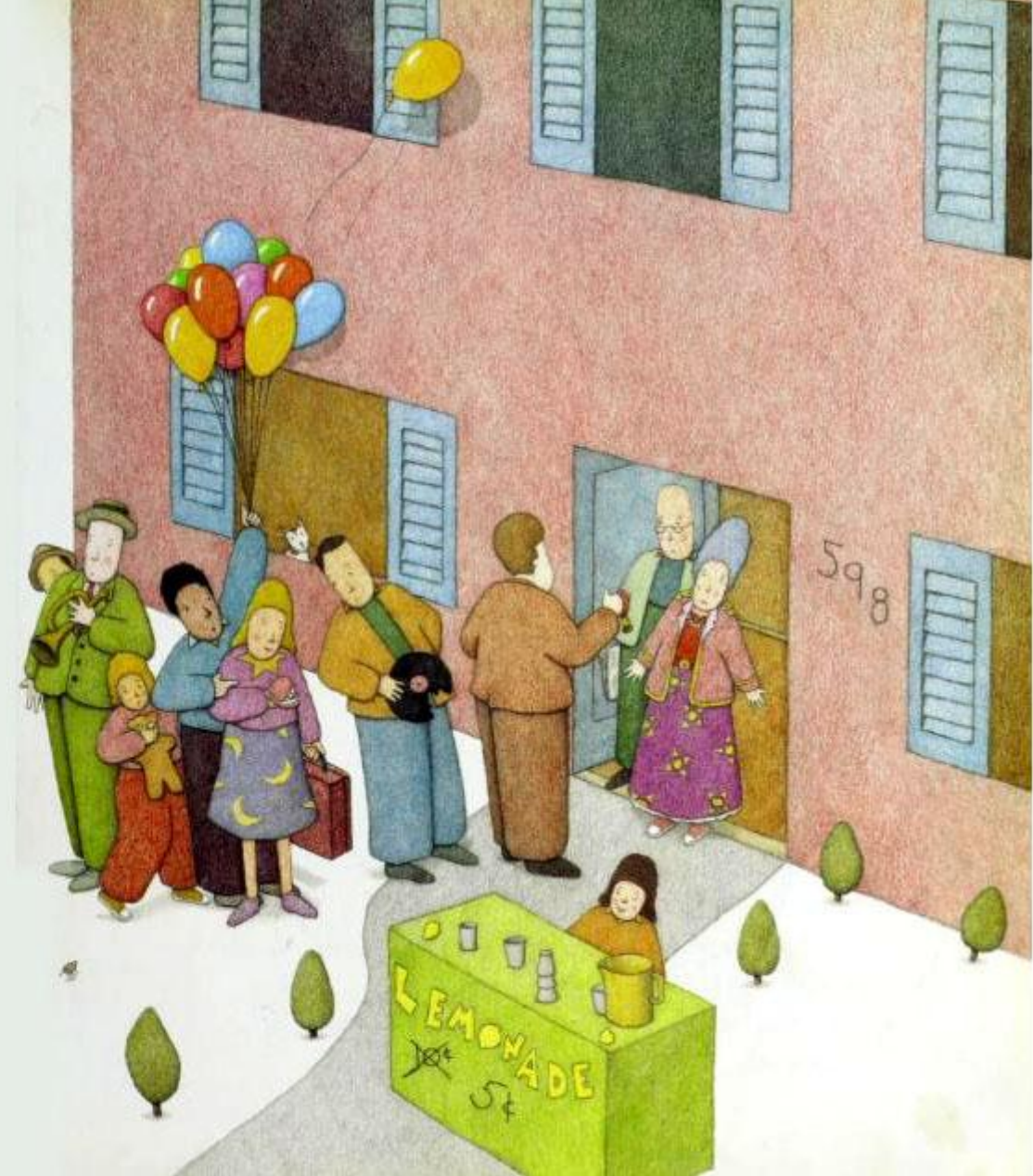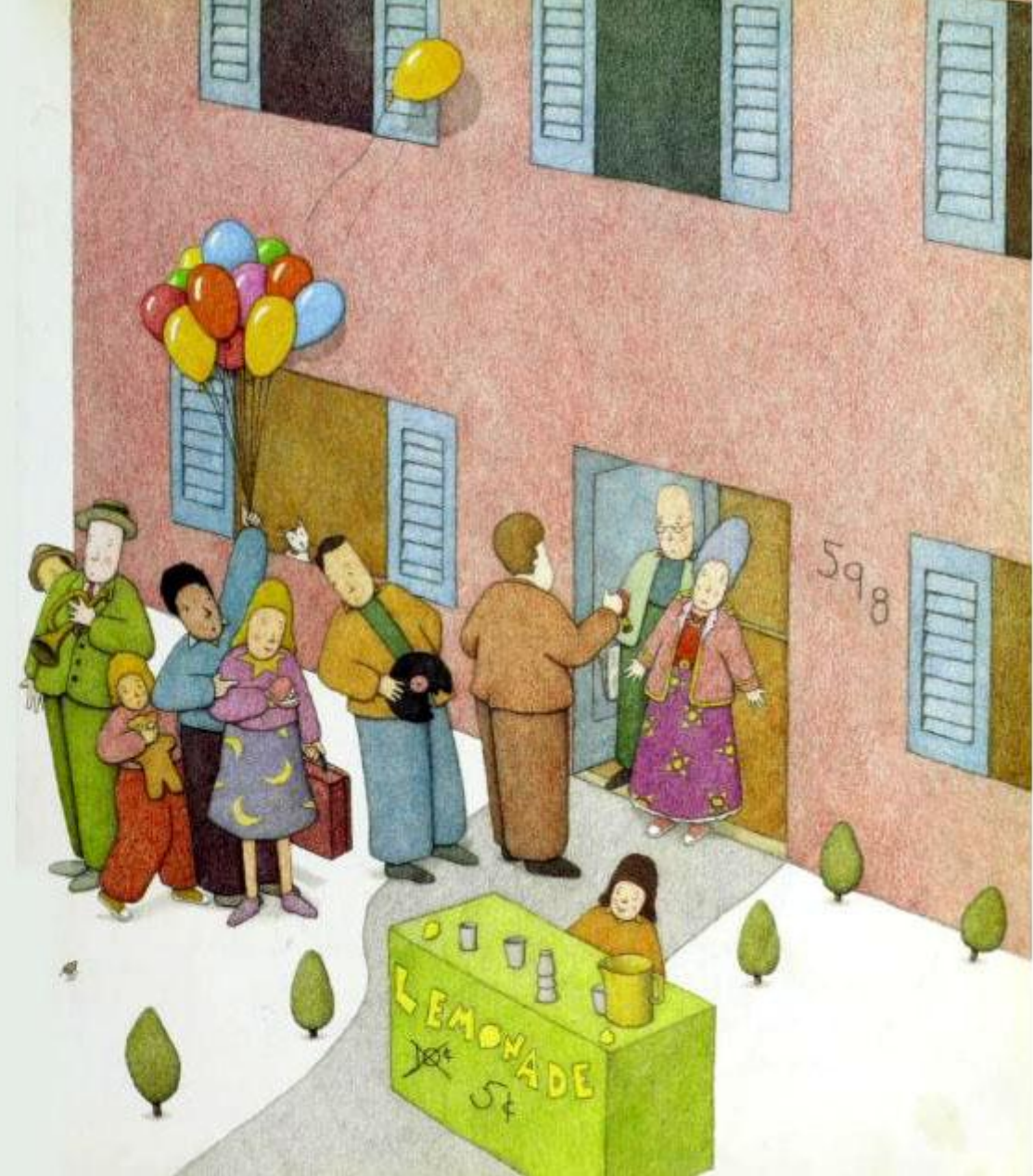
अगले दिन, सुबह से शाम तक मारग्रेट चाची खिड़की से बाहर देखती रहीं. जब से ग्लैडीज़ तूफान आया और गया था, तब से किसी ने मारग्रेट चाची को ‘सब ठीक है’ कहते हुए भी न सुना था.

कुछ तो होने वाला था, लेकिन क्या? चाचा और चाची को मैंने फिनैगन म्यूज़िक स्टोर आने के लिए कहा.

“यह रहे पच्चीस सैंट. मुझे एक लाल रंग का हार्मोनिका दें, प्लीज़,” मैंने मिस्टर फिनैगन से कहा.

मिस्टर फिनैगन ने मुझे हार्मोनिका दिया. वह नया और सुंदर था. मैं जानता था कि इसकी आवश्यकता किसे थी.
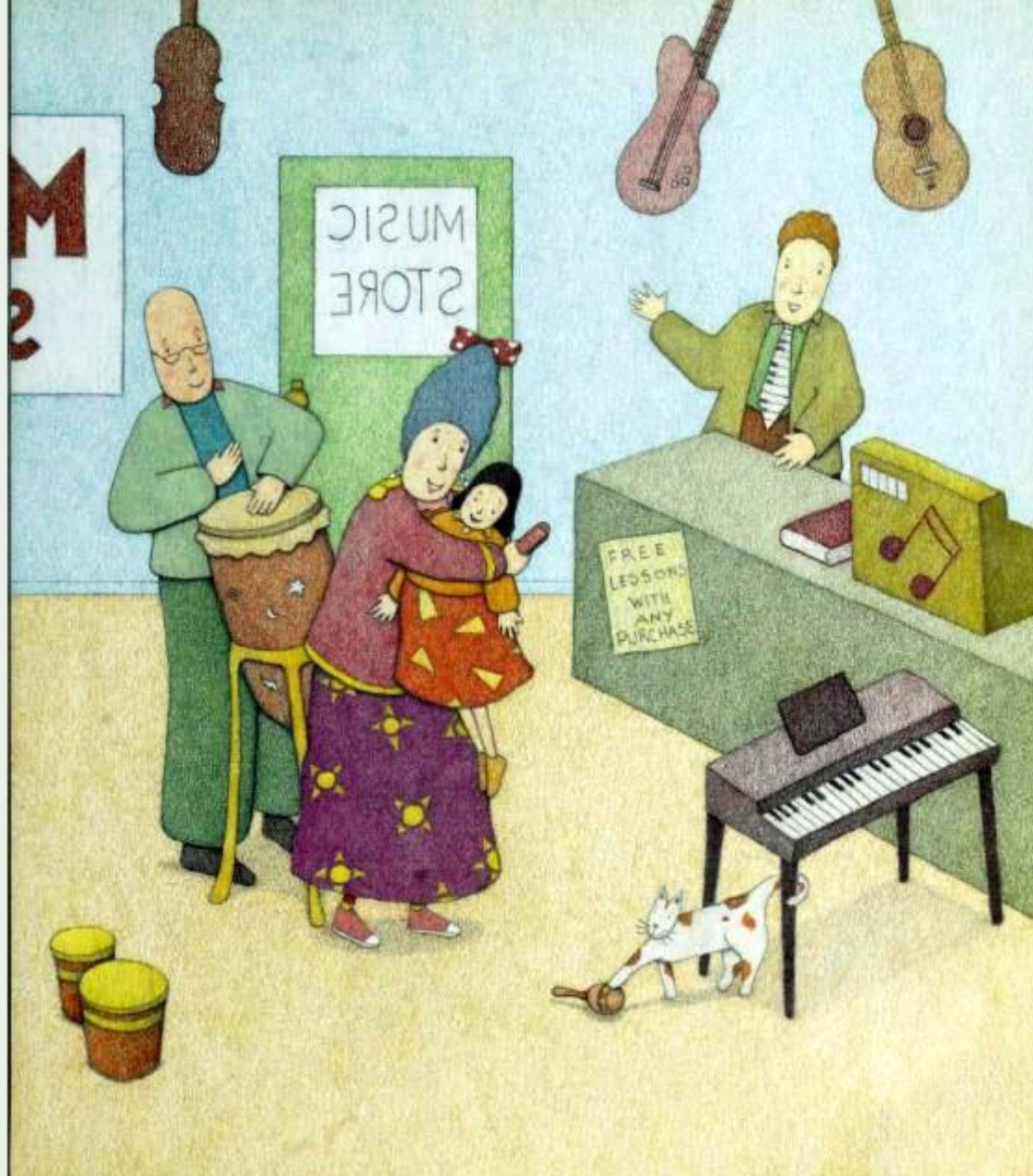
"संगीत सम्राट की शपथ," मारग्रेट चाची ने अपने होंठ सिकोड़ लिए. उस छोटे से यंत्र पर उन्होंने अपनी सारी शक्ति लगा दी. आरम्भ की तानें ऊँची और किकियाने जैसी थीं. बाहर हवा चलने लगी. शुरु में हवा की गति मंद थी.

मारग्रेट चाची अभी शुरु ही हुई थीं: उनके गीत में थरथराहट थी, फिर उनका संगीत गूंजने और गरजने लगा. दनदनाती आँधी चलने लगी. हवा ठंडी हो गई और बारिश की बूंदें धरती से टकरा कर कुत्ते की नाक तक उछलने लगीं.
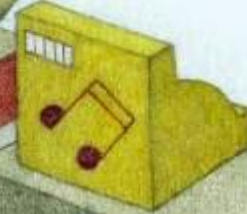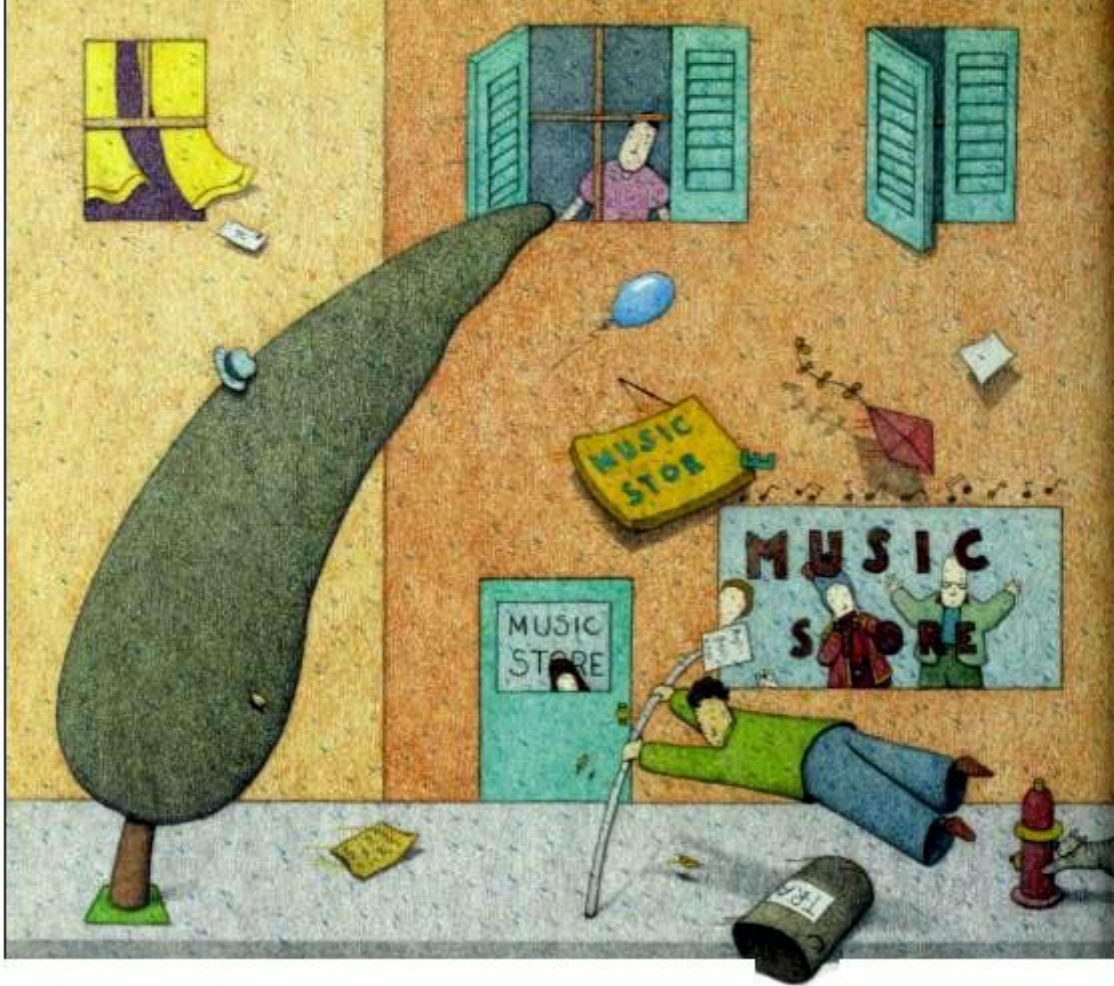
“अच्छा होगा कि हम खिड़कियाँ कस कर बंद कर दें,” सीमौर् चाचा ने मिस्टर फिनैगन को कहा. “जब मारग्रेट संगीत बजाती है तो हर चीज़ बंधन-मुक्त हो जाती है!”

ग्लैडीज़ का जुड़वाँ भाई, हैरोल्ड तूफान, तट पार कर नगर में आ पहुँचा.
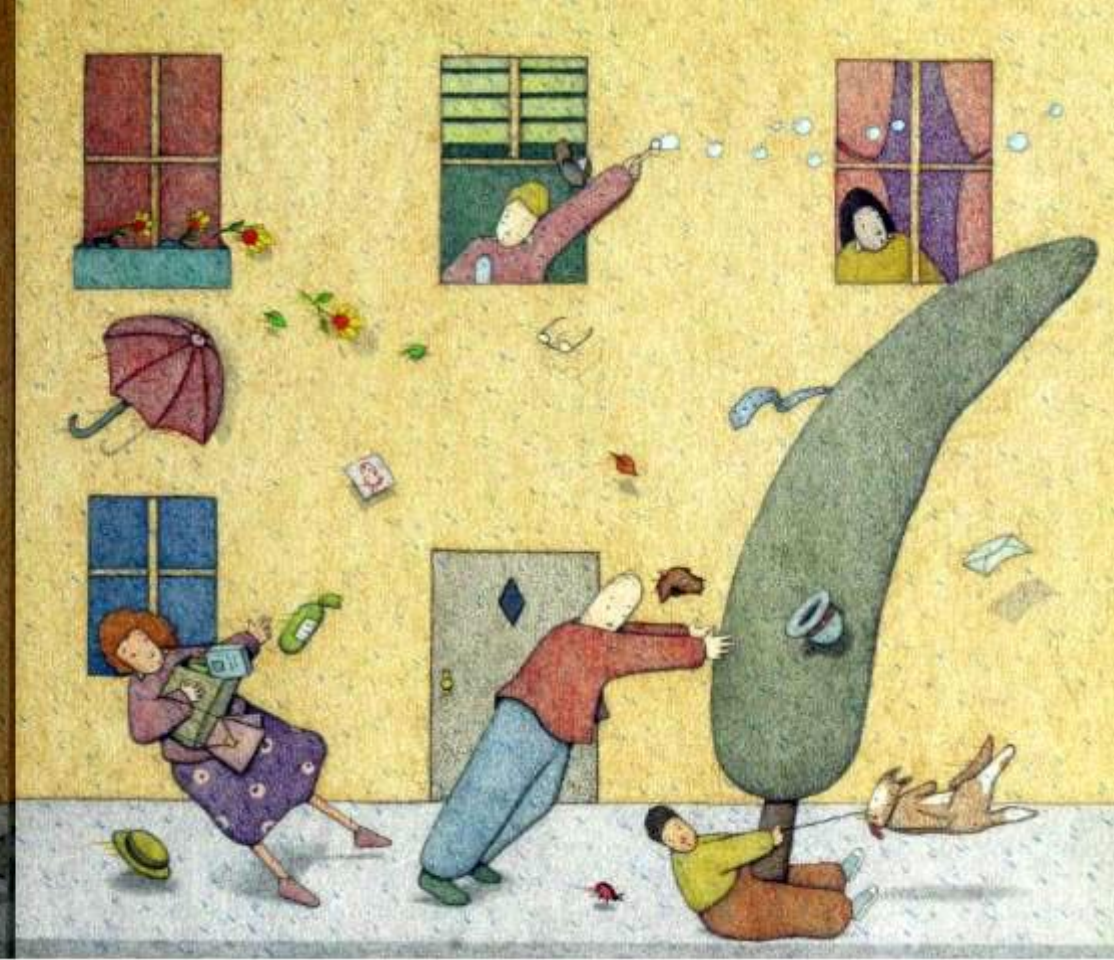
और वो तूफान बहुत ही भयंकर था.

उस छोटे से हार्मोनिका को बजाते हुए भी मारग्रेट चाची बहुत उत्साहित थीं. उनकी उन्मुक्त और उत्तेजित तानों के कारण भीषण बारिश शुरु हो गई.

दीवारें कांपने लगीं, खड़खड़ाने लगीं. सब कुछ दिल दहलाने वाला था. सब घबराये से प्रतीक्षारत थे कि तूफान कैसी तबाही लायेगा.

फिर प्रवेश द्वार धमाके के साथ खुल गया. मिस्टर फिनैगन के स्टोर के फ़र्श पर अचानक कुछ आ गिरा. वह थी मारग्रेट चाची की क्लैरिनेट जो मिट्टी से लथपथ थी, पर टूटी हुई न थी.

हर जगह पानी टपक रहा था, लेकिन मारग्रेट चाची ने अपनी क्लैरिनेट ज़मीन से उठाई और उसे साफ किया और सुखाया.

"महान संगीतकार की शपथ!" वह चिल्लाईं. हैरोल्ड तूफान के चलते हुए भी उन्होंने उसी पल एक नई तान बनाई. लेकिन यह तान शांत और प्रसन्न करने वाली थी.

बादलों की गर्जन धीरे-धीरे कम होने लगी, भयंकर तूफान थमने लगा. आधी रात होते-होते हैरोल्ड तूफान रुक गया और हल्की, धीमी फुहार बन गया.
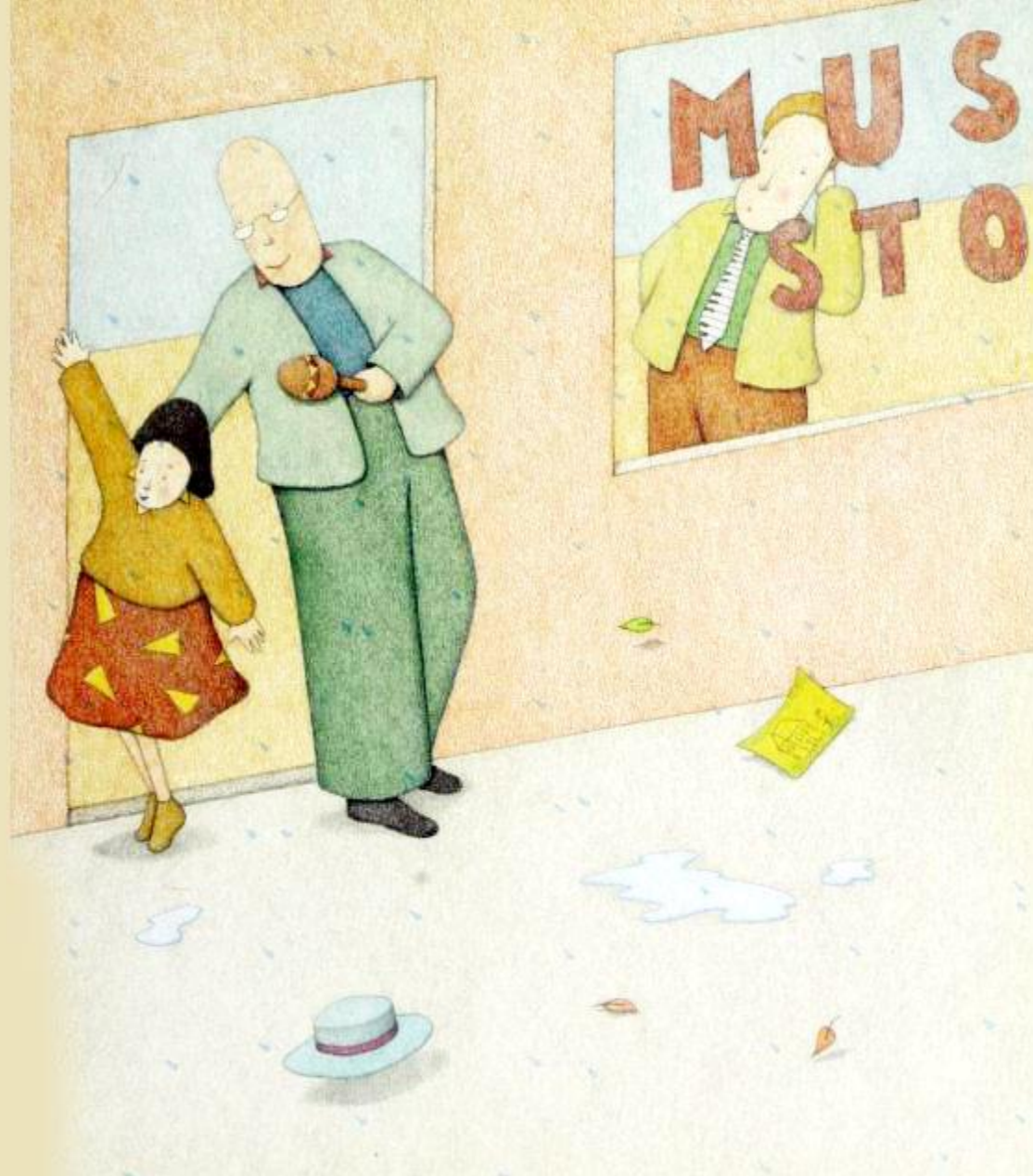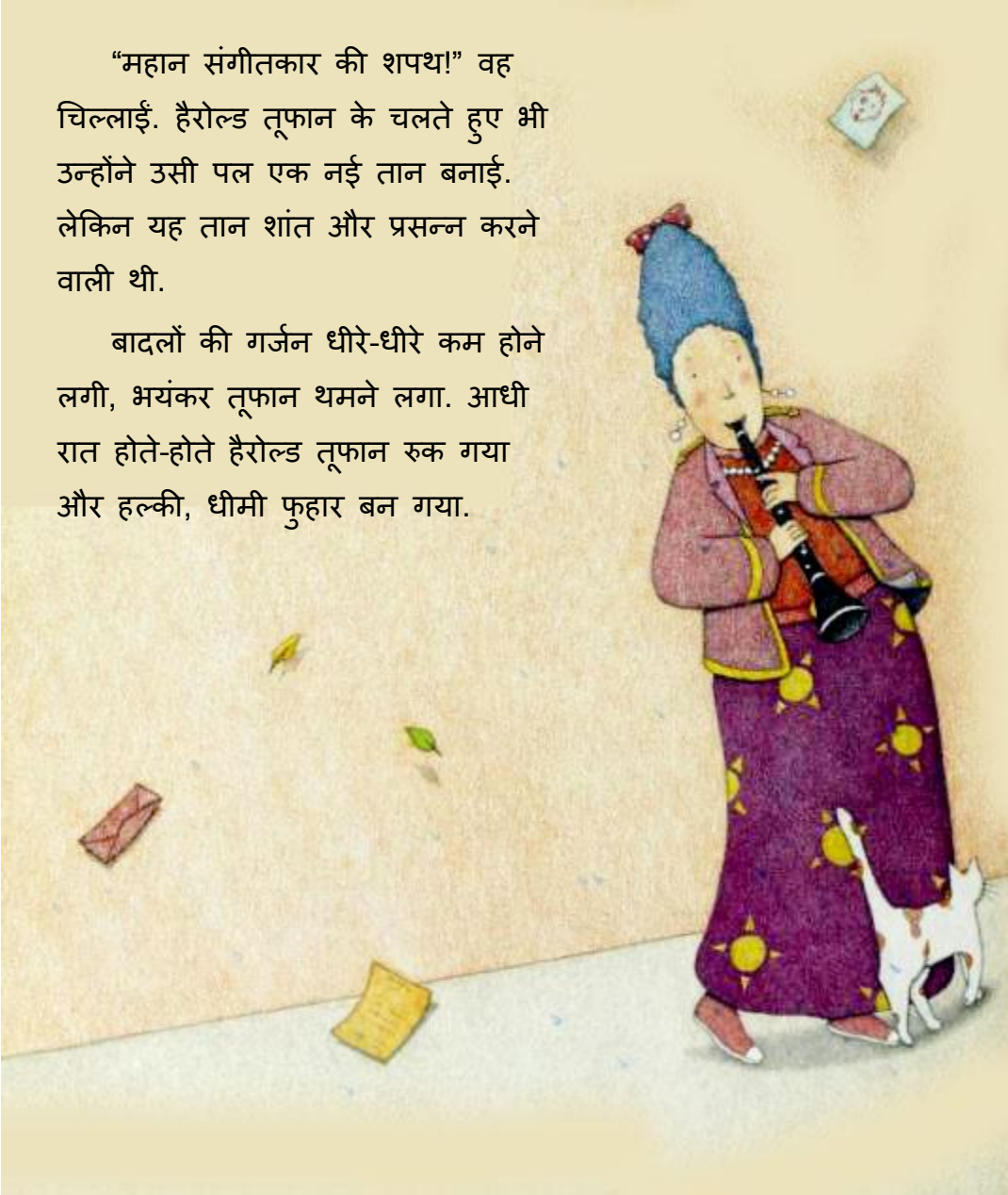
सीमौर् चाचा हमें घर वापस ले आये और हमारे लिए पुदीने वाली चाय बनाई.

मेरे सोने से पहले मारग्रेट चाची ने लाल हार्मोनिका मेरे हाथों में दे दिया.

"क्या कहते हो?" सीमौर् चाचा ने पूछा.

मैंने कहा, "नाचो, गाओ, मौज मनाओ!" बेशक.

समाप्त